खुश राजकुमार

ऑस्कर वाइल्ड

उस उच्च स्तम्भ पर स्थित खुश राजकुमार (हैप्पी प्रिंस) की शानदार प्रतिमा शहर के अधिकारियों का गौरव थी. लेकिन राजकुमार की नीलम की आंखें नीचे झुकी हुई थीं और आंसुओं से भरी हुई थीं. हैप्पी प्रिंस का बहुमूल्य रत्नों से जड़ा हुआ पुतला अचल था. वो गरीबों को राहत देने में अब कुछ भी मदद नहीं कर सकता था. पर तभी एक अबाबील (स्वालो) चिड़िया राजकुमार से मिलने आती है. राजकुमार पक्षी को अपना दूत बनाता है और उसके ज़रिये जरूरतमंद लोगों को अपने कीमती रत्न भिजवाता है. सर्दियों में जीवित रहने के लिए, अबाबील को एक गर्म देश में उड़कर जाना चाहिए. लेकिन अबाबील अब जर्जर राजकुमार के प्रेम में फंसकर, खराब परिणामों के बावजूद वहीँ रहने के लिए मजबूर है. बहादुर छोटी चिड़िया वो सब करती है जो राजकुमार उससे कहता है. अंत में खुश राजकुमार और चिड़िया दोनों के पास देने को कुछ नहीं रह जाता है.

ऑस्कर वाइल्ड की क्लासिक परी-कथा करुणा और निस्वार्थता की एक लाजवाब मिसाल है. रॉबिन के सुंदर चित्रों ने उसे एक नया जीवन दिया है.

खुश राजकुमार

ऑस्कर वाइल्ड

शहर के ऊपर, एक ऊँचे स्तंभ पर, खुश राजकुमार (हैप्पी प्रिंस) खड़ा था. वो बारीक सोने की चादर से जड़ा था. उसकी आँखों में दो चमकीले नीलम जड़े थे, और एक लाल माणिक (रूबी) उसकी तलवार की नोक पर चमक रहा था.

लोग उस पुतले की बहुत प्रशंसा करते थे. "वो किसी मौसम दिखाने वाले मुर्गे की तरह सुंदर है," एक नगर पार्षद ने टिप्पणी की. पार्षद अपना कलात्मक रुझान दिखाने के लिए प्रतिष्ठा हासिल करना चाहता था; "पर वो इतना उपयोगी नहीं है," उसने यह झूठ कहा क्योंकि उसे डर था कि लोग उसे अव्यावहारिक न समझें, जो वास्तव में वो नहीं था.

"तुम उस खुश राजकुमार की तरह क्यों नहीं हो सकते?" अपने छोटे लड़के से माँ ने समझाते हुए कहा. उसका बेटा चाँद के लिए रो रहा था. "देखो खुश राजकुमार कभी किसी चीज के लिए नहीं रोता है."

"मुझे इस बात की खुशी है कि दुनिया में कोई तो ऐसा व्यक्ति है जो काफी खुश है," एक निराश आदमी ने उस अद्भुत प्रतिमा को देखकर कहा.

"वह एक परी की तरह दिखता है," चैरिटी चिल्ड्रन ने कहा. वे लाल स्कर्ट में गिरजाघर से बाहर आए. स्कर्ट के ऊपर उन्होंने सफेद ब्लाउज पहना था.

"आपको कैसे मालूम?" गणित के मास्टर ने कहा, "क्या आपने पहले कभी परी देखी है?"

"हाँ! ज़रूर अपने सपनों में," बच्चों ने जवाब दिया. गणित का मास्टर कुछ डरा हुआ और वह बहुत गंभीर लगा, क्योंकि उसे सपने देखने वाले बच्चे अच्छे नहीं लगते थे.

एक रात शहर के ऊपर एक अबाबील (स्वालो) पक्षी उड़ता हुआ आया. उसके दोस्त छह हफ्ते पहले ही मिस्र चले गए थे, लेकिन उसे एक सुंदर रीड (नरकट) के साथ प्यार हो गया था. इसीलिए वो पीछे रह गया था. वो वसंत ऋतु में एक पीले पतंगे का पीछा कर रहा था. तभी उसकी मुलाकात नदी के किनारे उस रीड (नरकट) से हुई. उसकी पतली कमर देखकर वो इतना आकर्षित हुआ कि वो उससे बातें करने के लिए रुका.

"क्या मैं तुमसे प्यार करता हूँ?" अबाबील ने कहा, जो अपनी बात को साफ़ और सीधे कहता था. यह सुनकर रीड ने अपनी कमर झुकाई. फिर अबाबील ने गोल-गोल उड़कर अपने पंखों से पानी को छुआ, और चांदी की लहरें बनाईं. यह उनका प्रेमालाप था, जो पूरी गर्मियों भर चला.

"यह बड़ा हास्यास्पद लगाव है," अन्य अबाबीलों ने कहा, "उसके पास पैसा-धेला कुछ नहीं है, और उसके बहुत सारे रिश्तेदार हैं." और सच तो यह था कि नदी रीड्स (नरकटों) से काफी भरी हुई थी. इसलिए जब शरद ऋतु आई, तो बाकी सभी अबाबीलें उड़ गईं.

अपने मित्रों के चले जाने के बाद वो अबाबील अकेला महसूस करने लगा, और अपने महिला-प्रेम से थकने लगा. "हमारे बीच कोई बातचीत नहीं हुई," उसने कहा, "और मुझे डर है की वो नकचढ़ी निकली क्योंकि वो हमेशा हवा के साथ इश्क लड़ाती थी. क्योंकि जब भी हवा बहती है तब रीड सबसे सुंदर नृत्य करती थी."

"मैं मानता हूँ कि वह घरेलू है," उसने जारी रखा, "लेकिन मुझे यात्रायें पसंद है, और मेरी पत्नी को भी यात्रा से प्यार होना चाहिए."

"क्या तुम मेरे साथ चलोगी?" उसने आखिरकार रीड से पूछा. लेकिन रीड ने अपना सिर हिलाया और मना किया क्योंकि वो अपने घर से जुड़ी थी.

"अच्छा तो तुम मेरे साथ दिल बहलाने के लिए सिर्फ खिलवाड़ कर रही थीं," अबाबील रोया. "अब मैं पिरामिड के पास जा रहा हूँ. अलविदा!" और फिर वो उड़ गया.

उसने दिन भर उड़ान भरी, और फिर रात को वो शहर पहुंचा. "मैं कहाँ रुकूँ?" उसने कहा; "मुझे उम्मीद है कि शहर ने मेरे रहने की कुछ तैयारी की होगी."

फिर उसने पुतले को एक ऊँचे स्तंभ पर खड़े देखा.

"मैं वहीं रहूंगा," उसने कहा. "वो एक अच्छी जगह है जहाँ हर समय ताज़ी हवा के झोंके आते हैं." फिर वो खुश राजकुमार के पैरों के बीच में आकर उतरा.
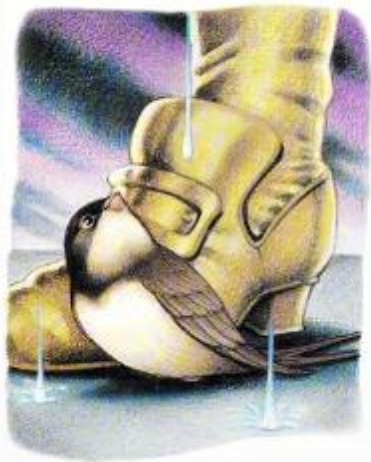
"यहाँ मेरे पास एक सुनहरा बेडरूम है," उसने अपने आसपास देखते हुए कहा. पर जैसे ही वो सोने की तैयारी कर रहा था और अपने सिर को अपने पंख के नीचे दबा रहा था वैसे ही एक बड़ी पानी की बूंद उसपर आकर गिरी. "यह कैसी अजीब बात है!" वो चिल्लाया. "आकाश में कोई बादल नहीं है, तारे साफ़ चमक रहे हैं, और फिर भी बारिश हो रही है! यूरोप के उत्तरी भाग में जलवायु वास्तव में भयानक है. रीड (नरकट) को बारिश पसंद थी, लेकिन उससे उसका स्वार्थ जुड़ा था."
फिर एक और बूंद गिरी.

"अगर वो बारिश तक नहीं रोक सकता तो फिर उस पुतले का क्या उपयोग?" उसने कहा; "मुझे एक अच्छी चिमनी की तलाश करनी चाहिए," और फिर उसने वहां से दूर जाने की ठानी.
लेकिन इससे पहले कि वो अपने पंख खोलता, एक तीसरी बूंद गिरी.
फिर उसने सिर उठाकर देखा, आह! क्या देखा उसने?
खुश राजकुमार की आँखें आँसुओं से भरी थीं, और उसके सुनहरे गालों पर आँसू लुढ़क रहे थे. राजकुमार का चेहरा चाँदनी में इतना खूबसूरत लग रहा था कि छोटी अबाबील का दिल दया से भर गया.
"तुम कौन हो?" उसने पूछा.
"मैं खुश राजकुमार हूं."
"फिर तुम रो क्यों रहे हो?" अबाबील ने पूछा;
"तुमने मुझे अपने आंसुओं से गीला क्यों किया?"
"जब मैं जीवित था तब मेरा एक मानव हृदय था," पुतले ने उत्तर दिया,
"तब आँसू क्या होते हैं, यह मुझे पता तक नहीं था, क्योंकि मैं सैंस-सौसी के राजमहल में रहता था जहां दुःख को प्रवेश करने की अनुमति तक नहीं थी.

दिन में मैं बगीचे में अपने साथियों के साथ खेलता था और शाम को मैं ग्रेट हॉल में नृत्य का नेतृत्व करता था. गोल बगीचा एक बहुत बुलंद दीवार से घिरा था. क्योंकि मेरे आसपास इतनी सुंदरता थी इसलिए दीवार के पीछे क्या है यह पूछने की मैंने कभी परवाह तक नहीं की. मेरे दरबारी मुझे खुश राजकुमार बुलाते थे और मैं अपनी विलासिता में बेहद खुश था. इस तरह मैंने अपना जीवन जिया और बाद में मैं मर गया. फिर मेरे मरने के बाद उन्होंने मुझे यहां इतनी ऊंचाई पर खड़ा कर दिया कि यहाँ से मैं अपने शहर की सारी कुरूपता और उसकी सारी व्यथा देख सकता हूं. हालांकि मेरा दिल सीसे का बना है, लेकिन अब मैं रोने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता.

"क्या, वो ठोस सोने का नहीं बना है?" अबाबील ने खुद से कहा. अबाबील बहुत विनम्र था और वो किसी पर व्यक्तिगत टिप्पणी नहीं करता था.
"दूर," एक संगीतमय स्वर में प्रतिमा ने बोलना जारी रखा, "यहाँ से थोड़ी दूर एक छोटी गली में एक गरीब घर है. उसमें एक खिड़की खुली है, जिसमें से मैं एक महिला को मेज पर बैठे देख सकता हूँ. उसका चेहरा उदास और फीका है और उसके मोटे हाथों में सुई और सिलाई की सभी चीजें हैं, क्योंकि वह एक दर्जिन है. वो रानी की नौकरानी के पहनने के लिए एक साटन-गाउन पर फूलों की कढ़ाई कर रही है. कमरे के कोने में एक बिस्तर पर उसका छोटा लड़का बीमार पड़ा है. उसे बुखार है, और वो एक संतरा मांग रहा है. माँ के पास उसे देने के लिए नदी के पानी के अलावा कुछ भी नहीं है, इसलिए वो लड़का रो रहा है. प्रिय अबाबील, क्या तुम मेरी तलवार की मूठ से लाल माणिक (रूबी) निकालकर उस दर्जिन को दोगे? मेरे पैर पूरी तरह से बँधे हुए हैं और मैं हिल नहीं सकता हूँ."

"मैं मिस्र जाने का इंतजार कर रहा हूं," अबाबील ने कहा. "मेरे दोस्त नील नदी के ऊपर-नीचे उड़ रहे हैं, और कमल के फूलों से बातें कर रहे हैं. जल्द ही वे महान राजा की कब्र में सोने के लिए जाएंगे. राजा खुद वहां अपने चित्रित ताबूत में चिरनिद्रा में सोया है. उसका शरीर पीले लिनन में लिपटा है और मसालों से पुता हुआ है. उसकी गर्दन पर गोल हरे रंग के बहुमूल्य रत्न जड़े हैं, और उसके हाथ मुरझाए हुए पत्तों की तरह हैं."

"अबाबील, अबाबील," राजकुमार ने कहा, "तुम मेरे साथ एक रात रहो और मेरे दूत की तरह काम करो. देखो, वो लड़का इतना प्यासा है, और उसकी माँ बहुत दुखी है."
"मुझे लड़के पसंद नहीं हैं," अबाबील ने जवाब दिया. "पिछली गर्मियों में मैं जब नदी पर रह रहा था तब चक्की के मालिक के दो शैतान लड़कों ने मुझपर लगातार पत्थर फेंके. मुझे एक भी पत्थर नहीं लगा, क्योंकि मैं उड़ने में और कलाबाज़ियां लगाने में बहुत तेज़ हूँ. पर उन लड़कों ने मुझपर पत्थर फेंककर मेरा अपमान ज़रूर किया."
पर खुश राजकुमार के चेहरे पर इतनी उदासी देखकर अबाबील को बहुत दुःख हुआ. "ठीक है," अबाबील ने कहा, "मैं कैसे भी करके इस ठंड में एक रात गुज़ारूंगा और आपका दूत बनूँगा."
"तुम्हारा बहुत शुक्रिया, अबाबील," राजकुमार ने कहा.
फिर अबाबील ने राजकुमार की तलवार में से लाल रंग का माणिक निकाला और वो शहर के ऊपर उस दर्जिन के घर की ओर उड़ा.
वो चर्च के ऊपर से उड़ा जहाँ पर सफ़ेद संगमरमर की बनी तमाम परियां पहरा दे रही थीं.

जब वो महल से गुज़रा तो उसे नीचे से नाचने की आवाज़ सुनाई दी. फिर एक खूबसूरत लड़की अपने प्रेमी के साथ बालकनी में बाहर निकली.
"आसमान में कितने अद्भुत सितारे हैं," उसने कहा, "और प्रेम की शक्ति कितनी अनूठी है!"
"मुझे उम्मीद है कि मेरी पोशाक राजसी नृत्य के लिए समय पर तैयार हो जाएगी," उसने उत्तर दिया; "मैंने इस बार पैशन-फूलों की कढ़ाई करने का आदेश दिया है, लेकिन वो दर्जिन बहुत आलसी है."
अबाबील नदी के ऊपर से गुजरा, और उसने जहाजों के मस्तूल पर लालटेन को लटका हुआ देखा. अंत में वह गरीब के घर पहुंचा और उसने अंदर देखा. लड़का- अपने बिस्तर पर बुखार से तड़फ रहा था और माँ थकने के कारण सो गई थी. अबाबील ने हाँफते हुए, उस महिला की सिलाई मेज पर लाल माणिक रख दिया. फिर उसने अपने पंखों से लड़के के माथे को सहलाया. "मुझे कितना अच्छा लग रहा है," लड़के ने कहा. "मैं जल्दी ही ठीक हो जाऊँगा;" उसने कहा और फिर वो दुबारा से गहरी नींद में खो गया.
उसके बाद अबाबील खुश राजकुमार के पास वापस उड़ कर आई, और उसने उसे सब कुछ बताया. "बड़ी अजीब बात है," अबाबील ने टिप्पणी की, "हालांकि यहाँ बहुत ठंड है लेकिन अब मुझे काफी गर्मी महसूस हो रही है."
"यह इसलिए है क्योंकि तुमने अभी एक नेक काम किया है," राजकुमार ने कहा.

फिर छोटा अबाबील सोचने लगा, और सो गया. सोचते समय उसे हमेशा नींद आती थी. जब दिन हुआ तो वह नदी में जाकर नहाकर आया.
"क्या एक उल्लेखनीय घटना है," ऑर्निथोलॉजी के प्रोफेसर ने पुल पर गुजरते हुए कहा, "सर्दियों में एक अबाबील!" और उन्होंने स्थानीय अखबार को इस बारे में एक लंबा पत्र लिखा. उस पत्र की लोगों ने खूब चर्चा की. पर वो इतने भारी-भरकम शब्दों से भरा था कि लोग उसे समझ नहीं पाए.
"आज रात मैं मिस्र जाऊँगा," अबाबील ने कहा और वो यह सोचकर ही खुश था. फिर उसने सार्वजनिक स्मारकों की यात्रा की, और चर्च की चोटी पर लंबे समय तक बैठा रहा. वो जहाँ कहीं भी जाता वहां गौरइये एक-दूसरे से कहतीं, "देखो, उस प्रतिष्ठित अजनबी को!" यह बात उसे काफी पसंद आती.
जब चाँद उगा तो अबाबील वापस खुश राजकुमार के पास उड़ा. "क्या आपको मिस्र में मेरे लिए कोई काम है?" उसने पूछा. "मैं अभी अपनी यात्रा शुरू कर रहा हूं."
"अबाबील, अबाबील." राजकुमार ने कहा, "क्या तुम एक और रात मेरे साथ नहीं रहोगे?"
"मुझे अब मिस्र जाना है," अबाबील ने जवाब दिया. "मेरे दोस्त भी मेरे साथ उड़कर जाएंगे. वहाँ नदी में घोड़े नहाते हैं, और महान ग्रेनाइट सिंहासन पर भगवान मेमन बैठते हैं. पूरी रात वो सितारों को निहारते हैं, और जब सुबह का तारा चमकता है, तब वो खुशी से चीखते हैं और फिर चुप हो जाते हैं. दोपहर के समय पीले शेर, पानी पीने के लिए नदी की धार पर उतरते हैं. उनकी आंखें हरे रत्नों की तरह चमकती हैं, और उनकी दहाड़ बड़ी तेज होती है."

"अबाबील, अबाबील," राजकुमार ने कहा,
"मैं शहर में एक युवक को उसके छोटे से कमरे में बैठे देख रहा हूं. वह एक डेस्क पर झुका है और कागजों से ढंका हुआ है. उसके एक तरफ एक गिलास में मुरझाए हुए वायलेट के फूल पड़े हैं. वो अपने लेखन को खत्म करने की कोशिश कर रहा है. वो रंगमंच के निदेशक के लिए एक नाटक लिख रहा है. पर ठंड के कारण उससे लिखा नहीं जा रहा है. वहाँ भट्टी ठंडी पड़ी है, और भूख ने उसे बेहोश कर दिया है."
"मैं आपके साथ एक रात और इंतजार करूंगा," अबाबील ने कहा. वो वास्तव में एक अच्छे दिल का प्राणी था. "क्या मैं उसके पास भी एक रूबी ले जाऊं?"
"काश यह संभव होता! पर अब मेरे पास अब कोई माणिक नहीं बचा है," राजकुमार ने कहा: "अब बस मेरी आँखें ही बची हैं. वे दुर्लभ और बेशकीमती नीलम की बनी हैं जिन्हें भारत से हज़ार साल पहले लाया गया था. तुम मेरी आंखों के एक नीलम को निकालकर उसे उस युवक को जाकर दे दो. वो उसे जौहरी को बेच देगा, फिर उससे जलाऊ लकड़ी खरीदेगा और फिर अपना नाटक पूरा करेगा."
"प्रिय राजकुमार," अबाबील ने कहा, "मैं ऐसा नहीं कर सकता," और वह खुद रोने लगा.
"अबाबील, अबाबील," राजकुमार ने कहा.

"जैसी मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं तुम बिल्कुल वैसा ही करो." फिर अबाबील ने राजकुमार की आंख बाहर निकाली और वो उसे छात्र को देने के लिए उड़ा. घर के अंदर घुसना काफी आसान था, क्योंकि छत में एक छेद था. वो छेद में से तेजी से कमरे में गया. युवक अपने सिर को दोनों हाथों में थामे बैठा था इसलिए उसने अबाबील की फड़फड़ाहट नहीं सुनी. कुछ देर बाद जब उसने देखा तो पाया कि मुरझाए हुए वायलेट के पास एक सुंदर नीलम पड़ा था.

"ऐसा लगता है कि मेरे काम को कोई तो प्रशंसक है," उसने कहा. "यह किसी प्रशंसक की ही भेंट है. अब मैं अपना नाटक समाप्त कर सकता हूं." और फिर वो काफी खुश दिखा.
अगले दिन अबाबील बंदरगाह पर चला गया. वह एक बड़े जहाज के मस्तूल पर बैठ गया और वहां नाविकों को रस्सियों के साथ बड़ी पेटियों को उतारते-चढ़ाते हुए देखता रहा. "ज़ोर लगाके हैया!" हरेक नाविक सामान के ऊपर आते ही चिल्लाता. "मैं मिस्र जा रहा हूँ!" अबाबील ने कहा. लेकिन किसी ने भी उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और जब चंद्रमा आसमान में ऊपर आया तब अबाबील खुश राजकुमार के पास वापस लौटा.
"मैं आपको अलविदा कहने आया हूं," उसने कहा.
"अबाबील, अबाबील," राजकुमार ने कहा, "क्या तुम एक रात और मेरे साथ नहीं रह सकते हो?"
"यह सर्दी का मौसम है," अबाबील ने जवाब दिया, "और जल्द ही यहां सर्द बर्फ पड़नी शुरू होगी. इस समय मिस्र में ताड़ के पेड़ों के ऊपर सूरज गर्म होगा और आलसी मगरमच्छ कीचड़ में सोते होंगे. मेरे साथी इस समय बाल्बेक के मंदिर में एक घोंसला बना रहे हैं. गुलाबी और सफेद कबूतर उन्हें देख रहे हैं. प्रिय राजकुमार, मुझे आपको छोड़ने का बहुत दुःख है, लेकिन मैं आपको कभी नहीं भूलूंगा और अगले वसंत में वापिस आऊंगा. मैं आपके दोनों बहुमूल्य रत्न वापस लाऊंगा, जिन्हें आपने दान दिया है. मेरा माणिक, लाल गुलाब से भी अधिक लाल होगा, और नीलम, समुद्र से भी ज़्यादा नीला होगा."

खुश राजकुमार ने कहा, "नीचे चौक में एक गरीब लड़की खड़ी है. उसकी माचिस नीचे नाले में गिर गई है. अगर वो घर कुछ पैसे लेकर नहीं गई तो पिता उसे पीटेंगे. गरीब लड़की रो रही है. उसके पास कोई जूते-मोज़े नहीं हैं और उसका सिर भी नंगा है. अबाबील, तुम मेरी दूसरी आँख भी बाहर निकालो और उस लड़की को जाकर दे दो. फिर उसके पिता उसे नहीं मारेंगे."

"मैं आपके साथ एक रात और रहूंगा," अबाबील ने कहा, "लेकिन मैं आपकी दूसरी आंख नहीं निकाल सकता. फिर आप पूरी तरह से अंधे हो जाएंगे."
"अबाबील, अबाबील," राजकुमार ने कहा, "मैंने जो आज्ञा दी है, तुम वैसा ही करो."
फिर अबाबील ने राजकुमार की दूसरी आंख भी नोचकर बाहर निकाली. फिर वो उड़ा और उसने उसे गरीब लड़की की हथेली पर रख दिया.
"कितना प्यारा रंगीन कांच है!" छोटी लड़की चिल्लाई और फिर वो हंसती हुई अपने घर चली गई.
उसके बाद अबाबील राजकुमार के पास वापस आ गया. "अब आप अंधे हैं," उसने कहा, "इसलिए मैं अब हमेशा आपके साथ रहूंगा."
"नहीं, अबाबील," गरीब राजकुमार ने कहा, "अब तुम्हें मिस्र चले जाना चाहिए."
"मैं हमेशा आपके साथ रहूंगा," अबाबील ने कहा, और फिर वो राजकुमार के चरणों में लेटकर सो गया.
अगले दिन अबाबील, राजकुमार के कंधे पर बैठा और उसने राजकुमार को अलग-अलग देशों की कहानियाँ सुनाईं. उसने उसे लाल चोंच वाले हंसों के बारे में बताया जो नील नदी के किनारे लंबी-लंबी कतारों में खड़े होते थे, और अपनी चोंचों में सोने की मछली पकड़ते थे; स्फिंक्स, जो दुनिया जितना ही पुराना था और रेगिस्तान में रहता था और वो सब कुछ जानता था; व्यापारी जो अपने ऊंटों के साथ धीरे-धीरे अपने हाथों में एम्बर मोतियों की माला लेकर चलते थे.
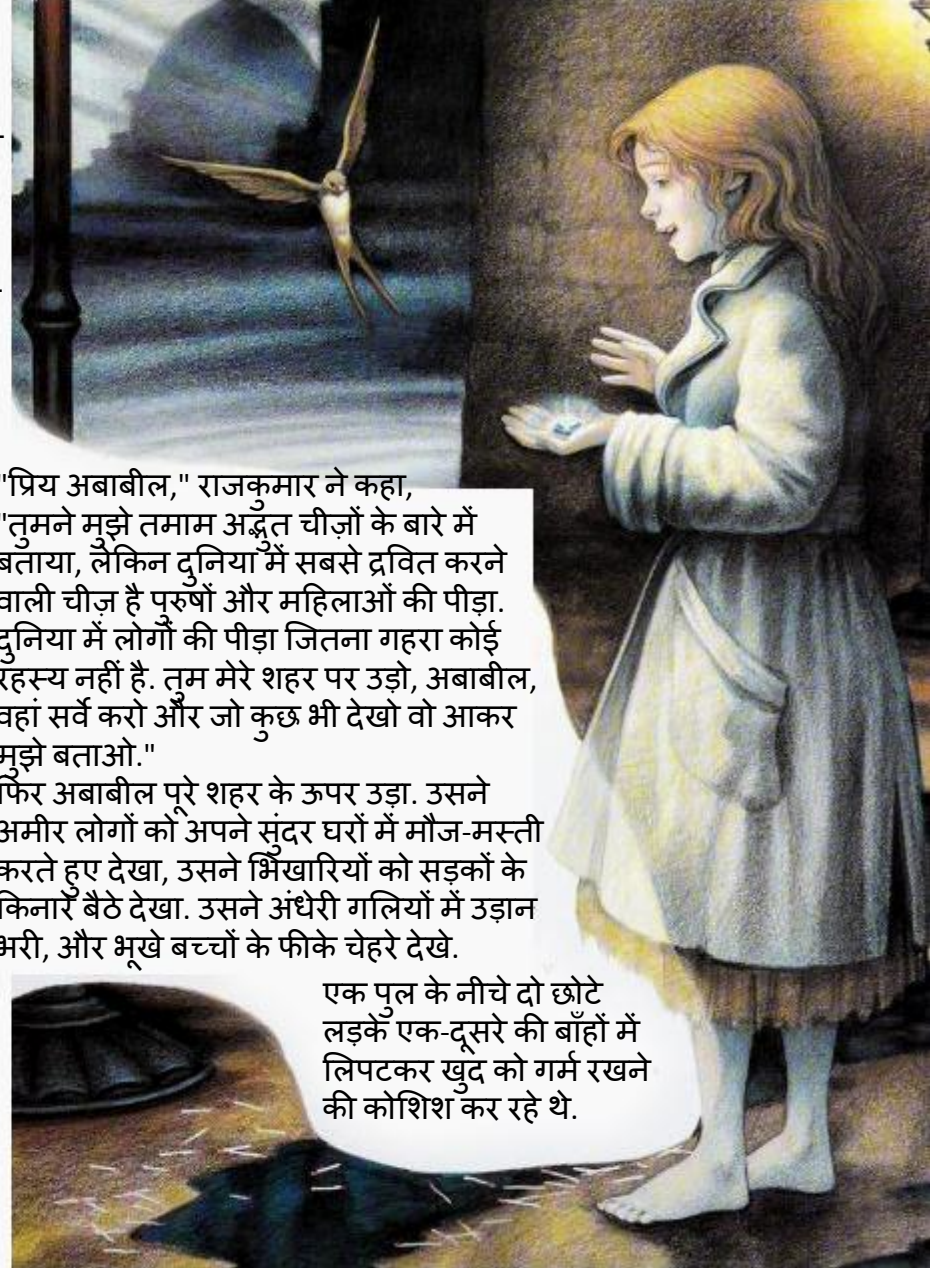
"प्रिय अबाबील," राजकुमार ने कहा, "तुमने मुझे तमाम अद्भुत चीज़ों के बारे में बताया, लेकिन दुनिया में सबसे द्रवित करने वाली चीज़ है पुरुषों और महिलाओं की पीड़ा. दुनिया में लोगों की पीड़ा जितना गहरा कोई रहस्य नहीं है. तुम मेरे शहर पर उड़ो, अबाबील, वहां सर्वे करो और जो कुछ भी देखो वो आकर मुझे बताओ."
फिर अबाबील पूरे शहर के ऊपर उड़ा. उसने अमीर लोगों को अपने सुंदर घरों में मौज-मस्ती करते हुए देखा, उसने भिखारियों को सड़कों के किनारे बैठे देखा. उसने अंधेरी गलियों में उड़ान भरी, और भूखे बच्चों के फीके चेहरे देखे.

एक पुल के नीचे दो छोटे लड़के एक-दूसरे की बाँहों में लिपटकर खुद को गर्म रखने की कोशिश कर रहे थे.

फिर उसने वापस उड़ान भरी और जो कुछ भी देखा वो उसने राजकुमार को बताया.
"मेरे शरीर पर सोने की एक पतली परत चिपकी है," राजकुमार ने कहा. "तुम इस पतली परत को धीरे-धीरे करके छीलो, और इसे मेरे शहर के गरीबों में बांटकर आओ : जीवित लोग हमेशा सोना पाकर खुश होते हैं."
फिर धीरे-धीरे राजकुमार के शरीर पर चढ़ी सोने की परत भी निकल गई. अब राजकुमार काफी सुस्त और दुखी लग रहा था.

जब सोने की परत के टुकड़े गरीबों के बच्चों को मिले तो उनके चेहरे की रौनक बढ़ गई, और वे हँसने लगे और गली में खेल खेलने लगे. "अब हमें रोटी मिलेगी!" वे चिल्लाये और रोये.
फिर हिमपात हुआ, और ज़ोरदार बर्फ गिरी. सड़कें ऐसी दिखने लगीं जैसे कि वे चांदी की बनी हों. वो बहुत उज्ज्वल और चमकदार दिख रही थीं. बर्फ के क्रिस्टल खंजरों जैसी घरों की छतों से नीचे लटक रहे थे. अब हर कोई मोटे फर वाले कपड़े पहने था. छोटे लड़के ऊनी टोपियां पहनकर बर्फ पर स्केटिंग कर रहे थे.
बेचारा अबाबील भी ठंड से एकदम पस्त हो गया था. लेकिन फिर भी उसने राजकुमार को नहीं छोड़ा. वो उससे प्यार करने लगा था. अबाबील ने बेकर के दरवाजे के बाहर फेंके हुए टुकड़ों को उठाया और उससे अपना पेट भरा. उसने अपने पंखों को फड़फड़ाकर खुद को गर्म रखने की कोशिश की.
लेकिन आखिरकार उसे पता चल गया कि वह मरने वाला था. उसके पास सिर्फ एक बार राजकुमार के कंधे तक उड़ान भरने की ताकत थी.
"गुड-बाय, प्रिय राजकुमार!" वह बड़बड़ाया, "क्या तुम मुझे अपना हाथ चूमने दोगे?"
"मुझे खुशी है कि तुम मिस्र जा रहे हैं, अबाबील," प्रिंस ने कहा, "तुम यहां बहुत लंबे समय तक यहाँ रह चुके हो, लेकिन मुझे प्यार करने के लिए तुम्हें मेरे होठों पर चुंबन देना चाहिए."
"अब मैं मिस्र नहीं जा रहा हूं," अबाबील ने कहा. "मैं मौत के घर जा रहा हूं. मौत नींद का भाई है, क्यों ठीक है न?"
फिर उसने खुश राजकुमार को होठों पर चूमा, और उसके पैरों में गिरकर मर गया.
उस क्षण प्रतिमा के अंदर एक दरार पैदा हुई, मानो अंदर कुछ टूट गया हो. सच्चाई यह थी कि उसका दिल दो हिस्सों में चटख गया था. यह निश्चित रूप से एक भयानक कठोर दंड था.

अगली सुबह तड़के महापौर नगर पार्षदों के साथ नीचे चौक में टहलने आए. जब वे स्तम्भ से गुजरे तो उन्होंने प्रतिमा को देखा: "ज़रा देखो! वो हैप्पी प्रिंस कैसा दिख रहा है!" उन्होंने कहा.

"एकदम जर्जर!" नगर पार्षदों ने कहा. वे हमेशा मेयर की हाँ में हाँ मिलाते थे. फिर वे पुतले को देखने के लिए ऊपर गए.

"माणिक उसकी तलवार से गिर गया है, उसकी आँखें भी गायब हैं, और वो अब सुनहरा भी नहीं है," मेयर ने कहा. "वास्तव में, वह एक भिखारी जैसा लग रहा है!"

"भिखारी से थोड़ा बेहतर," नगर पार्षदों ने सहमति जताते हुए कहा.

"और देखो उसके पैरों में एक मृत पक्षी पड़ा है!" मेयर ने कहा. "हमें घोषणा जारी करनी चाहिए कि पक्षियों को यहाँ मरने की अनुमति नहीं है." और टाउन क्लर्क ने मेयर के सुझाव को नोट किया.

इसलिए उन्होंने खुश राजकुमार के पुतले को गिरा दिया. "वो अब न तो सुन्दर है और न ही उपयोगी," विश्वविद्यालय में एक ज्ञानी प्रोफेसर ने कहा. फिर उन्होंने मूर्ति को एक भट्टी में पिघलाया. धातु के साथ क्या किया जाना चाहिए यह तय करने के लिए मेयर ने निगम की बैठक बुलाई. "वहां एक और मूर्ति होना चाहिए," उन्होंने कहा, "और अब वो प्रतिमा मेरी होगी."

"नहीं वो पुतला मेरा होगा," नगर पार्षदों में से प्रत्येक ने कहा, और उन्होंने झगड़ा किया. जब मैंने आखिरी बार उन्हें सुना वे तब भी झगड़ रहे थे.

"कितनी अजीब बात है!" फाउंड्री में काम करने वालों ने कहा. "यह टूटा हुआ सीसे का बना दिल भट्टी में भी नहीं पिघला है. हमें उसे फेंकना होगा." इसलिए उन्होंने उसे एक कूड़े के ढेर पर फेंक दिया, जहां मृत अबाबील भी पड़ा था.

"मुझे शहर की दो सबसे कीमती चीजें लाकर दो," भगवान ने अपने एक स्वर्गदूत से कहा: और वो स्वर्गदूत सीसे का दिल और मृत पक्षी लाया.

"तुमने ठीक ही चुना," भगवान ने कहा, "मेरे स्वर्ग के बगीचे में यह छोटी चिड़िया सदा गाएगी, और मेरे सोने के शहर में खुश राजकुमार मेरी प्रशंसा करेगा."

ऑस्कर वाइल्ड

19 वीं शताब्दी में लोगों ने परियों की कहानियों में नए सिरे से दिलचस्पी दिखानी शुरू की. उस रुचि के साथ, बच्चों की किताबें लिखने और प्रकाशित में तेजी आई. उस समय तक, अधिकांश बच्चों का साहित्य निर्देशात्मक या धार्मिक होता था, लेकिन 1823 में ब्रदर्स ग्रिम की लिखी कहानियों के अनुवाद ने इसे बदल दिया. अचानक, परियों की कहानियां फैशनेबल बन गयीं और बच्चों के मनोरंजन का एक स्रोत बनीं.

ऑस्कर वाइल्ड का जन्म 16 अक्टूबर, 1854 को डबलिन, आयरलैंड में सर विलियम और लेडी स्पेंज़ा वाइल्ड के यहाँ हुआ. उनके माता-पिता परी कथाओं के उत्साह में शामिल हुए, और ऑस्कर और उनके भाई के लिए उन्होंने आयरिश लोककथाओं का बढ़िया संग्रह इकट्ठा किया.

जब वाइल्ड बड़ा हुआ तब अपने बच्चों की वजह से उनकी परियों की कहानियों में दिलचस्पी जगी. उन्होंने "हैप्पी प्रिंस" तब लिखी जब उनका बेटा सिरिल एक शिशु था. इस कहानी में उन्होंने समाज की विषमताओं और गरीबों की पीड़ा को संबोधित किया.

30 नवंबर, 1900 को पेरिस, फ्रांस में वाइल्ड की मृत्यु हो गई.